

कथापुराणे

मार्क

१०२

मराठी

४९०/५ १११

४९०/५ १११

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४९०/५११ (पुणर)

ग्रंथ नाम भारत सुकृती

विषय कथा पुराणे

(1)

वाक् नि स्वयो नरका च ॥ इति उत्तरि हे ये सा च ॥ जिहिना
नायेषो फळ पा च ॥ विषया दीयते हे कोति ॥ १॥ सा ह्यर वि च
दर्शन देष्टी ॥ कोटि लि आठुलि वि चार दृष्टी ॥ जे सा च मोने नि य
गोष्टी ॥ हां व धरि ति भोगा यी ॥ २॥ हे से नि नि श्र ये श्री पु क ॥
बोल ता जाला नि ज दि वे क ॥ जे प विष ये काम बा ना पं क ॥ वो हो
ठो न ये श्रो न या ॥ ३॥ श्री पु क उ वा ये ॥ आनां तर सी ल गु णाः तरां
तरं मो क्षां तरं ॥ धर्म प था त रा तरं यो गां तरं यः पु नु षो न स व्य ते
मृ तां तरं मो क्षा त रं धर्म प था त रा तरं ॥ त स्य न र स्ये जि वि तं ॥ ४॥
रं मे हे के ये थार्य बोल ॥ तो ये क ये ये जि त चि मे ला ॥ जो न र दे ह पा
वो नि ब हिला ॥ आ स सा ध न न क रि च ॥ ५॥ तो तं कि ल सृ ण सृ ण
सि ॥ त रि हे क सां गे न तु ज पा सि ॥ नि हा नि स वि वे क ह्य सि ॥ ने ण
वे चि आ शाने ॥ ६॥ ई द्वि यां क रु नि यां मां ज रे ॥ सु ख भो ग वी ष य
सु ख का द्यार ॥ उ च ड वि ष इं अ वि चार ॥ तो डं सु नि वा रि तां ॥ ७॥

(2)

आज्ञान दरिद्रे आभागी॥ कुश्लीळ ते निरसा आगि॥ आलस
नेणो निआधर्म भागी॥ अवगति जोगि कुबुचिदें॥ ४०॥ सरिस
आवमान ये स्थान॥ मुकने मिष्टो न देखोन॥ हें सें जित चि पाहा
ण॥ मनूष्ये देहि मृतरूप॥ ४१॥ ज्ञान बोली जेत हा री॥ तेण इथे य रूप
हो ये ज्ञात॥ जे साबहि अळंगिता॥ काष्ट पण मुक्ति जे॥ ४२॥ ते ज्ञान
जिहि जोडे निरुत॥ सीव गुण ह्मणि जेत पाते॥ जे आमा निवृद्धि मि
त॥ साधन रूप बोलीले॥ ४३॥ आगि कजे का मोक्ष न गडा गळे॥ म
न स्वर्ग अक्हा टावे गळे॥ अर्म पयते बोलीले॥ श्रष्टे गळे जया राय
॥ ४४॥ सुनिश्चि याचे निज को॥ अमा ग योगाचे निमेळ॥ साधो ज्य
म्रियेचे द किले॥ राजा हा साधु कि॥ ४५॥ ते थडे मासे तो हा
विवेक॥ नो या साधु संग दखा॥ ह मोक्ष द्वारिचे निष्टका॥ द्वार
पाळा आपुले॥ ४६॥ या सिबोळ रिय असे जया॥ माजी प्रवेश हो
येत या॥ यात नोळखे जो प्राणि या॥ तो स्वर्ग ते लोहि जे॥ ४७॥
गह्रणा नितो न्ये संसारी॥ ज्ञान दिन प्रेत वारिरी॥ अमंगळ
विषय विष्टे वरि॥ सुकर न्यायेत नू नाळि॥ ४८॥ ज्ञानांत राचे व्या

॥१९८॥

॥१९८॥

2A

उ

ज्ञान॥ पुढे निपरि सतु विचक्षण॥ ज्ञान विज्ञान संपन्न॥ या
सिद्धिखुण कळेळ॥ १८॥ तारि आनाचार जेचि कर्म॥ साह नि
श्रेष्ठ सका मधमी॥ सका माह नि निष्काम॥ प्यचि कहे सजा
णने॥ ६०॥ कर्महि नि श्रेष्ठ सजन॥ सगुणाह नि श्रेष्ठ निगुण॥
फक्रि परिस श्रेष्ठ ज्ञान॥ अहं न गहन सा माजि॥ ६१॥ ज्ञान कर्म
सुपे सना भेदु॥ कांड च ये जो वेदु॥ हाहु नि उपनिषद् भागु॥
विषद कळ सुहे सज जीजे॥ ६२॥ हो ववे सुवगणा पय॥ सौर सा
क्ता हि समस्त॥ हां न हरि हाराच मक्त॥ प्य भेदे देखणे आगळे॥ ६३॥
आंग मां सारव्य मिमांसदा॥ बोच या वीकन ध्याईक॥ भट प्रभा
कर रूप पिक॥ नाना दर्शनि वादिचे॥ ६४॥ हात वेदांता यदिल मा
न॥ हे संजाणने तेचि ज्ञान॥ पाहाउ वाद मता सीमान॥ हचि प्य
ज्ञान बोल खिजे॥ ६५॥ सामान्ये शास्त्राह नि येया॥ आधी कशा स्त्रा
ने बळ येते॥ जे विस्वामिद र्शनाहु नि मृष्ट॥ वाराणसी चो आग
गळा॥ ६६॥ हे सि ज्ञानांतर पाहाता॥ श्रेवणे मनने निज धासि
ता॥ चिंतल गटांत घुता॥ सुखिळ गुण प्रगटति॥ ६७॥ वाचाह

(3)

॥२०॥

होये वागनुन्ये॥ दादु न जड हृमिरवी प्राश॥ महा उदेगि आ
पण॥ होये आळ सिठ दाहिवा॥ १५॥ कोपी होये परम शांत॥
मृगारिया होये विरक्ता॥ कोमि होये लोमातिन॥ सुखी हृगुण या
नवि॥ १६॥ धर्मस हृदमहा मतप॥ आम उये आर्जव रूप॥ लज्या
उपज देखोन पाप॥ सबाहे निकेप बुचिहें॥ १७॥ तिति दा आन सुया
येहा॥ दान धृती अध्यास॥ आहि सा शांति विरक्ति जनास॥ कौरसं
सारदुखाया॥ १८॥ हे सेहिक गुणच टोवडि॥ आनाया से जो
डिति जोडि॥ तव धर्म पयां नरे मोगादि॥ विचार बुद्धि शोचीत॥ १९॥
सहसंग धर्मनिःसंगता॥ निःसंग विनिर्मेता॥ निमेहि हे निश्चि
तता॥ शिव बभ्रुक्तता॥ अमर हिं॥ २०॥ हे सिये धर्म पयांतरि॥ दृ
ष्टि पडे मोक्षांतरि॥ साको व्यसामि प्य सार प्या वरि॥ काक स
ता दुर्धर॥ २१॥ न्योथा सा युज्या चा बाया॥ निगुण हे वसवि
माया॥ ह्रजो निअविनाष ब्रह्मातया॥ मोक्ष हे नाम बोलीजे
॥ २२॥ धाते चिअष्टांग योगांतरि॥ ध्याना चिआनि जमदिरि॥ स
माधी सेजे ये अरु वारि॥ उन्मनि सगे सुख भोगु॥ २३॥

॥२०॥

3A

हे न ज्ञो गिति जे प्राणिये ॥ ने पति परमार्थ चि सोये ॥ सांगितला विवेक ह
हे ये ॥ नातळतिच अळु भाळ ॥ ७५ ॥ नर देहा हे सेवरिष्ट ॥ परमार्थ भोजना
च तां ॥ सात विषये विष्टा दृष्टा ॥ भरिता विळ सिन ममिति ॥ ७६ ॥ आणिसर्प
खाये रित तोड ॥ ते विभोगाचे कष्ट का बाड ॥ निर्फळ परिला गले गोड ॥ सु
दाबु घिमु दाते ॥ ७७ ॥ चर्मिका हे से चित्त स काम ॥ शि श्रु विखेण करि
ठदि म ॥ दोरो परल सहक्त नम ॥ मवाळ निद चिती ॥ ७८ ॥ नाना फिन्न
कोटाळ दोरा ॥ दोरो परल रिक्त तो बरा ॥ तो दिहाट ता आदरा ॥ लाल म
रु नि साडित ॥ ७९ ॥ किश्चि यो निमुचें ह काचि कुपि ॥ तेथीत जल मग
पाहरा लिग निक्षेपि ॥ तो यिते जळ साहुनी पुनरपि ॥ संकोच लाये
वरता ॥ ८० ॥ ऐसे निकसे लिति देहि ॥ भोग भिक्षा र्थ जन गण
हि ॥ चित्त मिन करुनि दोहि ॥ कामिनि मंगि सुदेळी ॥ ८१ ॥ छेदुनि वे
सा ग्याचे प्राण ॥ उद्यउ पाडिले सलो भदशन ॥ छेत्री मरग दे म करुन
काव दिधला वसोता ॥ ८२ ॥ ते पिच मानुनि श्लाघेता ॥ आयुष्य न
शि इद्रियार्था ॥ ते प्रेत प्राये जिव जित ॥ सर्व हि वृथा तयाचे ॥ ८३ ॥ चि

(4)

गुधीगुतयाचे होरिरा॥धीगुधीगुतयाचे हे श्वर्य योरा॥जळोत याचरा
जमंदिरा॥असु विचार जे येनाहि॥७॥धिगुधिगुतयाचे साविदक
ज्ञान॥धिगुधिगुतयाचे दामिक सजन॥धिगुधिगुतयाचे तामस
दान॥स्फितीच श्वान जये हाति॥८॥आसु सोय नि सावचा॥वृथा
न धरिति नि मिष्यार्थ॥यातिक कळिळ रुध॥तयाचे चत्रे को की॥
॥९॥याते होतुं अवमानिले सधनि॥त होतुं निदिल दुर्जनि॥स होतुं
सादिल स्त्रिजनि॥विचार न जोडु लागे नि॥१०॥ते असोत को गुरु
हे हिन॥ते आसोत को शिष्ये हिन॥त न पण तु शास्त्र व्याख्याना॥वृद्ध
ध्यान सांगिका॥११॥परितेचि मष्ट निश्चीत॥तचि अक्षर की ति वत॥१२॥
जे आसु विचारि जागत॥निश्रम तप पंचि॥१३॥आसु नंदामृतरसा
॥१४॥सुठ निव्याचे चित निश्चळ॥आसु निरोपतां बोल॥निष्ठारंग मु
ख पद्मि॥१५॥उदार पणे मेघ नाथु॥सुख लकु लव निचा हतानि
सार स प्रतिपर माथु॥स मद हो निष्क वदे॥१६॥तिव के व्यायक्त मा
नो नियोरि॥विवाद माडिला प्रयातरि॥जे सी परि द्राज का वरि॥राज
दासि स्ववत॥१७॥कि वेदांते सि पाशा उतर्क॥भाग वत सित उ का क
सण्ण क्रिडे सारि स्वायेक॥चार पाया की मिहणे॥१८॥लेस दि चार

॥२९॥

॥२९॥

4A

सुरदु॥ षके शिकरि उवाहु॥ तोचि पुढिल श्लोकि विषदु॥ आर्यपरीसा
अतिही॥ ७॥ रं मउ वा न॥ हे लाल वेंगा विवासनांतर॥ ताबू बलर को
खुवि सुषितोतर॥ मुखो तेरा ये पुरुषो न राख्यते मृगोतर॥ तस्य नरस्य जिविते॥
॥ पदारे भाषण माहा मुनि॥ व्यर्थ का सिया सिण वावानि॥ यळु न हो ब
चिया सेणि॥ अनिर चित सा॥ ७॥ या या का यठ पयाग सांग॥ निफळ
साब दिचे वांग॥ कि मास वाडि ने सुरंग॥ ताबाल जै से बाळाच॥ ९॥ कि
विजया दस मिचे स्थिति॥ सुवर्ण ह्मणि मही कसि॥ अथ वा मराट
दे लि॥ लक्ष्मि ह्मणि जे रसे॥ १०॥ ते सीतु सेई यव चनि॥ पुक्तिरुज
ताचि मूवाणे॥ जे साचार मानि ति मने॥ ते हि शाहाण तुज सारि खु
॥ १॥ जळिका का महु नाचाना॥ तावे राग्य गिबि च्याउ से॥ निव विलोहि
बाल सिव चने॥ जेविका धावण विषयाणि॥ २॥ तपावनि जाले नसा
हा सी निव वावया येथ॥ संभा गळा या आणी छं मृत॥ कामि नि ये
अपरि च॥ ३॥ ते हि आचर जतिको मळ॥ सुरंग जै स बी वफळा दत पंक्ति
दे ति सलाल॥ फाके परि मळ बोलना॥ गावेळाळ वगा दि कपुर॥ मुक्त
पुण केत कि रव दिर॥ जाति फळ जाति पत्रा॥ पु गिर वंडे सोबी वे॥ ४॥ नागल
निका चि पर्णो तम॥ जे सित गट द्य उली हे म॥ हे सि चये दश गुणिका मे॥
ताबाल मुखि सर्व दा॥ ५॥ तेण सुरंग सुपरि मळ॥ वदन जाले हा तो मळ॥

5

तेयेआपुलेसुखसखिउठ॥करुनिचुवनजोनकरि॥७॥कस्तुतिठका
तनिउठि॥मस्तकमेळउनिभाळि॥हस्तवेठनिकुचकुंमंडळि॥मोगकाळी
संभ्रम॥८॥ममआचारमृताचिवाटि॥बळेळाउनियाहोडि॥रसनेयेदारी
पिटि॥जोनयेसाटिपिसुहाय्या॥९॥सुवनअचरधरनिदशने॥सोडितान
मनीमरणउण॥तोआरप्यरावासाहिरवाजाण॥हेसुखनेणेह्यणेनि॥१०॥अहा
सधनायासुखी॥हिसरोविलेसर्वकाळि॥येमनियेमायाकांडळि॥रक्तमांसअ
हिले॥११॥हेसिरंभेचिउतरा॥जेसिसोडवळसुरापात्र॥सुकसिविताभ्रत्र
कर॥विटाळमानिलाअंतरि॥१२॥मगसुधतमनवसन॥मिजोनहोइलस
चित्तस्थानहेसेवाक्येवदेसुझान॥हेहुरुनलदणि॥१३॥अशुकठवाच
प्रणमसुखमस्तुगंधंउनिन्यामीवनया॥मिमिकळरातकिणमुत्रवीष्टनुउण॥
विविधपहुसुसुहसद्वीरोगदिवस॥अवमरणमनिपंकितमोहाप्रसक्तं॥१४॥
वरळेऐकेवोनिधारे॥देहेखानि॥विषयकाश्रमे॥तेथेंवृणकरीतराधीर॥१५॥
वोपडेविभ्रम॥१६॥तोप्रतिदिनिप्रहाळिजे॥नूतनओषधपिडिदिजे॥
तहिनिकेयेहविंभाजे॥पुयग्रंथिकिमिजाळे॥१७॥आधायायेसंग
पदना॥नुबावयाकाहितमना॥साहूनिकपळतेअन॥सागकोणसेसा
रि॥१८॥धामेवियेमुखादिरंघे॥स्रवतिरक्तलाहृमुत्र॥नेहाकुनिदुर्गधिहर॥

॥२४॥

॥२४॥

5A

ताबुल गंधादिलेपिति ॥१५॥ तेभग द्वारिलिंगसुईज ॥ मुखें सुखळात्वा
टिजे ॥ आणिवृणायारससेविजे ॥ तिहीसारिरुपिजाणपां ॥१६॥ विचारि
नास्त्रियादेहे ॥ नरकपंकमुत्रडोहे ॥ फुटेळहणो निवळन पाटो ॥ यम
वृत्तेनेबाधले ॥१७॥ सतुश्रोणिनाचेलाट ॥ तुषळळि घालोटे निपाट ॥ येमि
साउवाउद्धट ॥ लुळबुळात किमिकडु ॥२०॥ तेयस्वरपिते कामिकमाळि
रुळळालीगाचिसुसळेकाळि ॥ माडिदादुमिमोकळि ॥ वाटकरिपिकाया ॥
॥२१॥ येकि हातवेउनिवडि ॥ दुष्टीचाळि नेफिरि ॥ येणेंजाणेंजन्मानरि ॥
येचिझरिघणोनि ॥२२॥ भंगणसोनिस्तनचिटेक ॥ तोवरडोहेभरुला
नरक ॥ तेयविचरतिजेनरवेखे ॥ किमिजंतुस्वरुपा ॥ हेकाकश्चानविष्टचि
उडि ॥ हेकिमिकुडानिसेनवडि ॥ हन्मगानवहिचिसगडि ॥ चितराया
पहडीलिया ॥२३॥ हेमाहखळायेमातेरे ॥ आधीरोगाचेबारवेरे ॥ आवि
द्याहतिचिपातिरे ॥ विषेयमोमयेमारिखे ॥२४॥ उद्योगसायासममता ॥
मुखवृणान्यवेळुव्यता ॥ अशौचअलाजनिर्दयेता ॥ ईहिहोस्तिवसविले ॥
॥२५॥ यालावप्यायेमात्रावरि ॥ काकादकाचेसरोवरि ॥ भोगार्थकिरिनामरा
उभरि ॥ दोणामाक्षारीविनाशे ॥२६॥ किहेकर्पुराचिहंडि ॥ चिविलीकाळमि

(6)

२३

च्या कुंडि॥ माजि भोगान्धियर वडि॥ राघु छण तां रा धाल॥ २॥ ऐ रिया छि
 दे हाये वाई॥ मोहे आस न जाळे पाहिजे दु डि वि प्रेत दे हि॥ स्प दे ह न हि
 या बोळा॥ २॥ र का ति र स्का क्ली चिति॥ बोली ले च बोळ पुट ति॥ जे
 सा कोटि आयु ला हा ति॥ वारं वार पाहा त से॥ ३॥ ना कळा विलि या सह
 सा॥ आयु ला भा व न संदि पिसा॥ खडून के छिया गा पुछा॥ न के पाल दु
 निज गुणा॥ ४॥ थापरि ते निजर ना रि॥ प्रयो तरि मृगार शास्त्री॥ दे ति ज
 लि आं तरि॥ वि कार करी ति॥ अ वि वे क पा॥ ५॥ र भा उ वा न्ये॥ अन ध्य व
 र्थे मणि मूषितां तर॥ निरंतरं च द न च चि ता तर॥ मुज न रं यः पुर णे न
 स व्य ने मृतां त रं त स्य न र स्ये ज वि ता॥ ६॥ आ मोळ व र्था ची कुं च कि॥
 ज उळि अन ध्य र त्त मा णि कि॥ प न वळे सा दि ल्या क न कि॥ चि त्र वि मि
 त्र परि करा॥ ७॥ पा र्वि या व रि म नो ह र॥ सु क्ता फळा चि म यो र॥ राज हं स पु क
 न्य को र॥ आ फि सु द र मि र व ति॥ ८॥ ज डि न मो ति या चि जाळि॥ वि र डि का
 शि लि क न क माळि॥ च द न मृ ग ना फि न्या मे छि॥ व रि ले पि ला व र्ग ज॥
 १॥ १५॥ सुर स ग्रा मि सी ण ला॥ म ग या मुज पं ज रि व फि ला॥ म ज रे सि च प
 ह उळा॥ हृ द ये डो ला रा तु ज दे सा॥ १६॥ कि म ज हे सि ये व स मा न्या॥ तु
 ज सा रि र वा न र दे वा न्या॥ उ सि स क र नि उ भ य कृ न्या॥ सु ख नि द्र ण आ न

२३

(6A)

प्रवि॥७॥ तोचि यन्ये यकयेया॥ सार्थक के छ तेणे जिवित॥ जो जिडा कोत
करेडि नावेळु कप्रिनि सुख संग॥७॥ जन्मे निज न निचे पोदि॥ या सुख
चि मेदि गोदि॥ स्वप्नी हि नेणे चितो मृष्टि प्रतादु नि कनिष्ट॥७॥ व्यर्थ ना सा
रं चि चारो मा॥ व्यर्थ उष्ट पुष्टि चेरु क्म॥ व्यर्थ मोजा कं ठि च्यु चर्म॥ स्तन हना
मत याचे॥७॥ जवादि जनि सानवृशण॥ मुपाळ मौळि बेसति साना॥ का
ये कर विलंबा ये मान॥ राव माये पै जे से॥७॥ ते सातु येक संसारि॥ दरिद्र
संगि पडळा कुहुरि॥ लोके देखा नि पळे दुरि॥ दिवा मिता सारि खा॥७॥ ए
संधीः काहि निरंभा॥ बाल तरि हृदये लीभा॥ पुकाच न पवे मग घुमा॥ व
च निउतर देत से॥७॥ श्रीपु कठ वाचा॥ यथा च लं जिवित मधु वंधनं॥ धृ
वंत थान स्य रूप यो वनं॥ तथे न मानुष्य मिदं सु दुर्लभं॥ कथं भवसा
महितं न बुध्यते॥७॥ टीका॥ जिवंस जीव हो नर देहो॥ सादे हार्थ भोगा
संगो हो॥ ते देह दुर्धर जाले पाहा हो॥ काळ सर्पाचे आने नी॥७॥ क
मळ दळा वरिल जळा॥ तैसे जिवित आति चंचळ॥ गीळि जे नव नि
नाचा कवळ॥ साहु निशिघ्र विनाई॥७॥ हे मांभरणे रत्नादिक॥
जी॥ ही उहुळि जे चितो दक॥ ते ही क्षणी कजे सरेखा॥ व्यामि ईद्र धनु

1

28

व्याधि॥७॥ काकानकाचेचुकि तवेगे॥ संपुष्टशरीर वागे॥ लाविलें
तं निमीषार्ध न लगे॥ तंव होय सील विकारो॥८॥ आपि शुक्र विजे
चें चांदी पें॥ ते सें तार प्ये हें पाहुणें॥ जातं वाई क्य मेहुणें॥ हा सवीत
ये जगाचा॥९॥ आतां भोगाचे जे भोग॥ ते ह्म पण चिनी शरीर सांग
बंधा सुता वें उत मांग॥ व्याम कुरसमी तुं रं विजे॥१०॥ की आवसेचे
नी चंद्रा मते॥ चीत्र चकोरें हो ते तें पें॥ मृगजळाचे नीवीं हृदो के उते॥
ध्याया पुरुषें ना हिंजे॥११॥ ते सें दारी रासी थ्या मुकिं॥ ते हिका का
चे दव्हे तकी॥ चपळ विषय साहेय फकि॥ खेळावया सरव कोणा
॥१२॥ जो करि देहा विभावना॥ ते माह मळारी चा सुणा॥ आसे ते न
रुत सांडुनि जाणा॥ श्वान पण मी र वतु॥१३॥ मग हे विषय हाक
दि कुट॥ या नाव ठेवी भाडार श्रेया॥ ते पें म मते चेल ल्लाट॥ चर्चनी फी
रे भुंकत सें॥१४॥ तरी मृक्यै सा महा व्याध्या॥ मुख पें सरा नि ये समो
रा ति थें हा विषय हिरवटा चारु॥ देह धेनु कै पुचे॥१५॥ ऐसे परि हे दु
र्लभ देहा॥ परमार्थी वें जो उलेंगे हे॥ जाणा नी आणानु साधन श्रेह॥१६॥

28

7A

तु नि स्वहित न करि ॥ ५५ ॥ ते कल्पते ~~कल्पते~~ जगो हृमाने वाटिके ॥ बंते
नि आभाये ईछि तुभी क ॥ काम धेनु ची का सदुखे ॥ रुचि काला गि दुहित
से ॥ ५६ ॥ धापहु जे निचि नामणि या घडि ॥ ह्मण मि यक दिन दछि दि ॥ व्यर्थी
वो नि को ये करि ॥ ये संसारि हत देवा ॥ ५७ ॥ परिस ये उनि यां करि ॥ बळ चारु नि
तुखा परि ॥ गुण न के मा सुगारि ॥ पाहाण ह्मणो नि हाति या ॥ ५८ ॥ ते स नूद
हित द्या ॥ आवच रत्ना म पुच्य वंता ॥ जे मई सर प्राप्ती पा हाता ॥ हा नात छि
आतुडे ॥ ५९ ॥ ते चि विसर नि कार्या यु ॥ वाट उनि विषेय स्वार्थ ॥ आयुष ना
सी जे लि लि तू ॥ तो जिवन मु कजा गावा ॥ ६० ॥ मोह फ्रमा यिये वो ह छि
मिथ्या है श्वर्य हरियेलि ॥ विषय संसार आलि ॥ सुद तिज व छि स्वर जे सा
॥ ६१ ॥ ते सु नि ब अद्य ते चि आउ दि ॥ दयो नि प्र मदा गाद वि ॥ पुरुष राष
भा यो र वि ॥ न क आउ विलो रि ता ॥ ६२ ॥ ग्रा सु वा स अ य मिक ॥ स्तु तिष ष
ष र जो का के ॥ पुछ के छे करि मो क के ॥ बळ खे का छे र मा व या ॥ ६३ ॥ जे का चारा
न लगे तो डि ॥ ते का रा ग व दा का श डि ॥ वर्म स्पर्ष ह्ये को डि ॥ धालि जा डि पाद पु
छा ॥ ६४ ॥ ऐ लियाराष भा माग मागे ॥ लाज सा डो नि स्त्री जिवे आ गों जे धाव
ति विवे क सागे ॥ यु यु जग सा ह्मण ति ॥ ६५ ॥ चर्म का ये चर्म जे सा ॥ जमले

(9)

पाणी पु उ नि पोषे ॥ स्नेहिल च विषये तै स ॥ सेविता चिदर ति नम नि ति ॥ ६५ ॥
 हे सि नि व न्मृ ता चि का हा नि ॥ आ सो का ये वोळ चि व द नि ॥ र भा खो यो नि अ
 तः क णि ॥ प्र ये त र दे त से ॥ ६६ ॥ म ग वोळि ली या गु ण अ ची क ॥ वि स्ता रि
 त वि ष ये सु खे ॥ अ नु वा द क री ते ना वे क ॥ श्रो ते कु नी प री सा वे ॥ ६७ ॥
 भा उ वा ये ॥ गं भी र ना मि स्त न मं डे तां त रं ॥ खे प्यां त रं मे ख ल भू चि
 तां त रं ॥ गु ह्यां त रं युः पु र षो न ते वी ते ॥ ए तां त रं त स्य न र स्य जी वि
 तं ॥ ६८ ॥ स्त र्वा ल ना मि अ ति गं वि र ॥ जे र ल व प्य म रो व र ॥ व र नि वि व री
 सु द र ॥ षा मे द की सु र सु री त ॥ ६९ ॥ से हि मा ल या चि यु ग के ॥ ते सि स्त
 न द्व य व र्त्त का ॥ उ च गे र सु सी त य ॥ स्व र नि व वि ति सं ता प ॥ ७० ॥ त या क न्य
 युं गां त रि ॥ र म्य र म णि क पा री ॥ त प न पु ति नि र त रि ॥ म ने आ स क्त पु र
 षा चि ॥ ७१ ॥ जे स क पु र के छि ये ला ॥ ते से जा न्द ये स्व य म ॥ चि र उ क
 छि ता स्व प्र भा ॥ गे र प ण मूळ वि जे ॥ ७२ ॥ कं ठि मू डि त र त मे ख का ॥ ते ते ज
 दा वि ना मि क म ला ॥ त या अं त रि गु ह्ये स्य का दे वा ग का तो दे खे ॥ ७३ ॥ श्लोक
 कु र्म पृ ष्ठि ग ज स्त धा ॥ अ नु द द व स नि मं ॥ नि ष ट य ति मा या ती ॥ सं भो ग सु म

॥ २५ ॥

॥ २५ ॥

(8A)

म

गासंगा॥ आटेक जैसि कुर्म पृष्ठा॥ ते सिया हातादि से दृष्टि॥ येक गजा वि
 माये टि॥ तया हैसि मृद्वे॥ टेक जैसि अस्व छद बे॥ सुरंगरंग अतिको मवे
 पृष्ठन करिति सुरत कावे॥ सुमगे मगे भोगितया॥ ७५॥ ऐसी गुह्य गुह्य गृहि
 आपुल गुह्य द्रियाते पाहि॥ न भोगि नायि पुरकाहि॥ ते प्रेत देहि जाणावे॥ ७६॥
 अधर नंचु बित अधरा॥ करन सी वी पगे चरा॥ गुप्त नळ निमंदिरा॥ रित
 पात नळ ति॥ ७७॥ रि सुख नंचु बिति ते वा॥ ते मगरां जना न्यकार
 कुचन मदिताते करयो॥ मोड विरोधीया॥ ७८॥ ते पाहाति चेहेतियरे
 कोण पुर शाथ करिल थोर॥ ते स्याये कामागार॥ निव्या पार लउ बडि
 ॥ ७९॥ छे विण फिर विण फिर विदह॥ गडियेन सता खेळये॥ नागा छि
 यु झदं दु॥ लाट पाडिलि कोननी॥ किलोळे विण चरा॥ वृहा मकटि देत
 सकृष्टा॥ ते सा पुरष वेव श्रेष्टा॥ न विन्या रित साहेतु॥ ८०॥ ऐसर मेने
 हाद कोख दे॥ ते दस्पर्षता षु कद्र विट॥ कर्ण प्रिधालु निबोट॥ आचो
 चदने निश्चय॥ ८१॥ मग विन्यास निप्रसोतरा॥ देता जाला नतुरे श्वरा॥
 णेष्ट गार रस सागर॥ दिखे हो मृगजळा सारिखा॥ ८२॥ शान बैराग्ये नि
 रोपण॥ माग बोळिळा विन्यक्षण॥ हाहुनि सविस्तर गहना॥ अनभव

(9)

ज्ञानप्रकटितु॥८॥ शुकोवाच॥ योगांतरं चैव निरामयांतरं अनंत
सौख्यात निराकुळांतरं शानांतरं यः पुरुषो न सेव्येते॥ मृतांतरं तस्य
नरस्य जीवितं॥९॥ बुधिर्यो ध्यायेत् मिच्छति॥ चित्तयेत न्या बुधावपि
मिह ताराहे सोहं पणि॥ मन उन्मदितलिन॥१०॥ ये या उभया न्यासयोगत
याचिनावहणीजे योग॥ तैसारसि सुखसंयोग॥ तै यो गारजाणीजे॥११॥
कातरुदहे से बोळिजे हिवा॥ हंपद नाम हे सजीवा॥ दाचे येति हे क्ये
भाया॥ त आसि पद योगराया॥१२॥ देवा चिये मिच्छति ये सधि॥ लाधमह
ज्ञानंद हि चि॥ ते चि योगांतरं ह चि बुद्धि॥ आहां विदाचे मानले॥१३॥ ते चि क
ळाकरु निउधडि॥ उक बुद्धि द्यांतरा चि दहि॥ जेण गुणग्राह्यका जोडि॥
जो उस्वरप आईत॥१४॥ तारे हे क जे पद ईस्वर॥ तो जाणावा दीप कार॥ माया
सबळ व्रज सविकार॥ हाया न्याय ते यिन्या॥१५॥ माया विनिमुक्त निःस्कं
प॥ सप्तज्ञानानंद स्वरूप॥ तो लक्षार्थ निलेप॥ परमाप्तिया न्या जाणिजे॥१६॥
मग्न पद तो जीव सहजा तो हि द्विधी धनो जाणिजे॥ वाचुलक्षण बो लिजे॥
उभय अंशतयाया॥१७॥ सुख सुदम दो निदेहे॥ परिवेषु निचैत न्ये राह॥ तो
चि वाचार्थ ह्यण पाहे॥ सबळ अंश जीवा न्या॥१८॥ देह द्वये विनिर्मुक्त॥ प्राकु

॥२५॥

॥२५॥

चैतन्येनेनिर्मुक्ततातेचिवोकीजेस्वार्थी॥ जिवाप्रयाचानिर्धरि॥ ६॥ जिवे
 चराचलं ह्यं स देहि॥ निवटो निकरा विमेळवणि॥ जेसंगं गयमुनेये पा
 णी॥ हे क्यं वा हे समरसे॥ ७॥ प्रतिबिंबं निजबीबातेपाह॥ नवबिबह्वंगल
 हे॥ दर्पणगिळिळे तरी आह॥ प्रतिमुख समुखा समुखे॥ ८॥ किमहदा का
 हा घटा काहा मेळवीले हे बोलीवोस॥ कायल हरि आणि हिराव्यि स॥ जवनि
 कपस आवाड॥ ९॥ हे सिउ भये ह सब को पायि॥ हागे करनी अमेद बुद्धि॥
 आंखंड हे कवंच अनादि॥ जाणोनि होति स ह ह्ये॥ १०॥ ते आखंड के सकाये तदि
 विजातिय जातिये॥ स्वगत वादि मंद त्रय॥ पारहित आंखंड ते॥ ११॥ विजाति
 ये मेदरहित॥ मणजे निस्पृह्य निचि॥ स गति मेदाति॥ हा आह मेद आ
 सना॥ १२॥ स्वगत मेदरहित॥ गिजा॥ पिब ह्य वो सरिजे॥ जे सा मेद
 धवे सिंधु होईजे॥ वेगळ पण विरुडि॥ १३॥ ते निष्ट सुध बुध मुक्त॥ सहाय भा
 व निगुण वंत॥ निरावेद सर्वगता॥ निष्कळक स्वर्प॥ १४॥ तिअ वेद
 याति॥ आसंग ब्रह्म वा हे स्मिती॥ योगि योगांतर पावती॥ सहजानंद समा
 धी॥ १५॥ निरामय ते मायाति॥ सर्वसक्त पना व्यतिरिक्त॥ तया आत रिया
 नत॥ सुख स्या नद साधक॥ राज धासु रवासि नादि आंत॥ १६॥ गिजा
 तिजे आंनता॥ ज्याचा अकुमाळ स्पर्शितावात॥ संसार भाव वि सरिजे॥ १७॥

(19)

१८५॥

ज्यासुखायेनि सुत्वादे॥ विषयेभोगाची स्पदे॥ सर्वभोमादि महद्रपदा
 विरसमानि किं विरक्ति॥ ६॥ पृथुपुनुरवायुचिष्टिरु॥ जउ भरतादिक नृप
 व॥ राज्यसाढे निआपार॥ गेले पुरदावितराग॥ ७॥ ज्यासुखाच्या प्राप्ति
 त्तागि॥ जाले व्याघ्रसर्पचैसंगि॥ ईद्रियाचे प्रकयागि॥ ८॥ ईद्रियेकरि निई
 धने॥ ९॥ माहायोगाचे सागर॥ गोष्पदप्रायमाभानितिनर॥ अवचडनपा
 चे डोगरु॥ उडोनि मागासां विनि॥ १०॥ ऐस जयासुखाच्या वेध॥ वाविनक
 ति देह दे॥ स्मरणि आधान प्रल्हदे॥ नले रियत साहिले॥ ११॥ ज्यासु
 खसिधुच्या लोटु॥ भरोनि बुडविमना गयोदु॥ ईद्रियेदेहदारी उकु
 ट॥ सुखानंदवोसंडे॥ १२॥ आरुहि भावाचि सुषणे॥ आंगिबाणति अमि
 ने॥ त्रयचे निआं किंगे॥ पुं चतुर्दश पार्षणे॥ १३॥ ते येसुदेहाचि वि
 स्मृती॥ तेचि स्वरुपाचि विस्मृति॥ लाजापकाचि मागुति॥ वाविनपडके
 गेळि॥ १४॥ तेथसुरतनदिचा फळफुळि॥ रेतप्रवाहेल पाळि॥ सुखउप
 जने सर्वकाळि॥ स्वईद्रियेकों दाटे॥ १५॥ समाधीरतिचा संप्रम॥ कामिणि
 संगे विजानिष्काम॥ आल्हादनिरोपम॥ विदेहावस्था सर्वदा॥ १६॥ किपर
 मायिनिद्रेचि आदि॥ प्रपंचजागराचि येसमाधि॥ भावउपजने सदादि॥

१८५॥

गोपितु अस स चिदा ॥ १५ ॥ ते का हृत्पद दृष्टादर्शपणे ॥ सचिदानंदु चिभावे
नेणे ॥ जे से दा किं व फळा च दाण ॥ ये कर से गोठ के ॥ १५ ॥ नान रि द्रो हिया च
पडी ॥ महिली अपेद ये क गो डि ॥ युक्ष दंडा चि मि न का डि ॥ स्वादु वेषे अपि
ना ॥ १५ ॥ ते स त्रि पु रि च नि मि से ॥ ब्रह्मानंदु चि आळा मु हो ॥ ऐ सि या सुरा
चे नि सु दि व से ॥ अ वि द्या रा मि ता र प कि ॥ १५ ॥ जे सु ख से उ नि ह्य ग मि
सु रि ॥ ते वृ ति वि र सु खो द कि ॥ ते सो र य्या न हे वि वे की ॥ अनु भ व नि ष्टी के
लि जे ॥ २० ॥ सा नि रा कु क ना हि अ व ची ॥ जे स क ल्पा ति ये छ द चि ॥ सा च
अंतर पा हा ना वे दि ॥ ने ति वा दे व दि ति ना ॥ २१ ॥ अ य वा मा या व रा ना ति ना ॥
स व वि स्था य नि रि क्त ॥ जे नि रा क क म पी जे त ॥ त धार हि त पर मा मा ॥ २२ ॥
ज्ञान ते चि ना त्रे क स्फु र ण ॥ त द्दि त ज नि ज भा व म्मु न्य ॥ ते चि श ना नंतर
सु चि श ॥ दे वा ग के से वि त ॥ २३ ॥ इ व न ह्य ण जे ऐ सि यु क्ति ॥ सो ह म स्मि य
या आ वृ ति ॥ पर मा म या र प हो ति ॥ कि टि म्म रि चे नि न्या ये ॥ २४ ॥ ऐ व वि
ष श णि ब ह्नु ति ॥ आ मा चि प्र ति पा दि ता ग्रं थि ॥ जे स्या सो ये रि की चि या ना ति ॥
पु रु श ना मि से दा ये ॥ २५ ॥ कि ना ना प यि ये क स्था न ॥ ना ना उ द मि य क ध न ॥
सा धि जे ते स ख र प जा ण ॥ खा खा नि ले ब ह्नु हो किं ॥ र धा न या म नू प म्ये अस



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com